हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 06

* घनानंद में भौतिक प्रेम का आध्यात्मिक प्रेम में विकास *

यह सर्वविदित है कि घनानंद बादशाह मुहम्मदशाह के मीर-मुंशी थे। इनका मुहम्मदशाह के दरबार में आने - जाने वाली एक वेश्या 'सुजान' से प्रेम था। दरबारियों के प्रपंच में आकर बादशाह ने उन्हें देश-निकाला दिया। घनानंद ने दिल्ली छोड़ते समय चाहा कि सुजान भी उनके साथ चले। लेकिन वह उनका साथ न जा सकी। घनानंद को इससे बड़ी ठेस पहुँची; सांसारिकता के प्रति उनके में विरक्ति हो गई और उन्होंने वृन्दावन जाकर निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली। पर अपना सर्वस्व त्याग कर भी घनानंद सुजान का नाम न त्याग सके। प्रेम का धरातल बदल गया, लेकिन आलम्बन न बन सका। अपनी प्रिया के नाम को ही उन्होंने आराध्य का नाम भी बना लिया और अब इसके विरह में तन्मय होकर कीर्तन करने लगे।

घनानंद की दृष्टि में मानवीय प्रेम ईश्वरीय प्रेम का ही लघुतम अंश है जिस प्रेम के समुद्र में राधा और कृष्ण विवश होकर स्नान - केलि करते हैं उसी की तरल तरंग से कोई बिन्दु छूटकर लोक में आ गया है वही प्रेम है इसकी चरम परिणति प्रेमी और प्रिया का अभेद है इसकी पदवी ज्ञान की ऊँची है।

घनानंद की प्रेम भावना में अतींद्रिय सौन्दर्य के रहस्यमय संकेत विद्यमान हैं प्रेम का प्रारंभिक रूप शारीरिक है रूप सौन्दर्य पर इंद्रियों की रीझ, विस्मय आदि के भाव अनुस्यूत हुए हैं पर इसका आगे भावना में विकास हुआ है प्रिय भले ही नाम राधाकृष्ण पर वे स्वभाव में 'आनंद के घन' तथा 'सुजान' हैं बादलों की तरह ही प्रिय सर्वत्र व्याप्त है प्राणों की वह गति है बुद्धि, स्मृति, नेत्र और वाणी में उसका वास है प्रिय के गुण गाते गाते बुद्धि उसी में उलझ जाती है प्रिय आँखों से दिखाई नहीं देते। यद्यपि सब जगह लहराये हुए हैं उन्हें पाकर प्रेमी खोये से खो जाते हैं

अपनी कृति 'प्रीति-पावस' में घनानंद लिखते हैं कि आनंदघन के निकट सदा प्रेमानंद का पावस ही बना रहता है। वहाँ चाहों की वर्षा होती है। वह ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है तृषा की अग्नि त्यों-त्यों प्रचंड होती जाती है। 'इश्कलता' में फारसी ढंग से अनेक प्रेमोपलंभ प्रकट किए गए हैं।

घनानंद ने लौकिक प्रेमलीला को अलौकिक प्रेम लीला का कण कहा है, किन्तु उन्होंने इसे कृष्ण प्रेम में छिपा रखा है। आचार्यों ने भी कृष्ण की प्रेम लक्षणा भक्ति का विकास लौकिक क्रीड़ा से सम्बन्ध रखकर किया। इसलिए सूफियों की 'प्रेम की पीर' को उसमें लय हो जाने का अवसर मिला है। घनानंद ने सुजान के प्रति अपने प्रेम (इश्कमजाजी) को राधा-कृष्ण की अलौकिक प्रेम लीला (इश्कहकीकी) का क्षुद्र अंश कहा है।

प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै,
बिचार बापुरो हहरि वार ही तें फिरि आयौ है।

संसार में फैला प्रेम-व्यापार उस प्रेम-महोदधि का एक कण है जिसमें राधा-कृष्ण जल केलि किया करते हैं। वही कण घनानंद और सुजान के प्रेम

में भी लगा हुआ है। सूफियों की भाँति घनानंद ने लौकिक प्रेम में कई स्थानों पर ब्रह्म प्रेम का आभास भी दिया है

उधरौ जग छाय रहे घनआनँद चातिक लौ तकियै अब तौ।
पाऊँ कहाँ हरि हाय, तुम्हें धरनी मैं धसौं कि अकासहि चीरौं।

कहना यह है कि घनानंद की प्रेमानुभूति का स्वरूप फारसी कवियों की तरह लौकिक ही है। राधा और कृष्ण तो तत्कालीन काव्य-परंपरा के कारण काव्य में गृहीत है। वस्तुतः सखी सम्प्रदाय, फारसी साहित्य तथा सूफि कवि इन तीनों की रहस्य भावना से कवि ने प्रेरणा ली है।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० - 8292227041।

दिनांक
17/10/2020